12

और सबै जगद्वन्द मिटावो...

और सबै जगद्वन्द मिटावो,
लो लावो जिन आगम–ओरी ।।टेक।।
है असार जगद्वन्द बन्धकर,
यह कछु गरज न सारत तोरी ।
कमला चपला, यौवन सुरधनु,
स्वजन पथिकजन क्यों रति जोरी ।।१।।टेक।।
विषय कषाय दुःखद दोनों ये,
इनतैं तोर नेह की डोरी ।
परद्रव्यनको तू अपनावत,
क्यों न तजै ऐसी बुधि भोरी ।।२।।टेक।।
बीत जाय सागरथिति सुरकी,
नरपरजायतनी अति थोरी ।
अवसर पाय 'दौल' अब चूको,
फिर न मिलै मणि सागर बोरी ।।३।।टेक।।

हे जीव ! जगत के अन्य सब दन्द-फन्द को छोड़ो और अपनी ध्यान रूपी लौ को मात्र जिनागम की ओर अग्रसर करो ।

क्योंकि जगत के सारे द्वन्द-फन्द असार हैं और बन्ध के कारण हैं। उनसेतुम्हारा कोई प्रयोजन सिद्ध होने वाला नहीं है। लक्ष्मी चंचल है, यौवन इन्द्रधनुष के समान (सुन्दर किन्तु क्षणभंगुर) है और कुटुम्ब-परिवार के लोग पथ के सहयात्री के समान हैं। तुम इन सबसे व्यर्थ मोह क्यों रखते हो।

हे भाई! विषय और कषाय - ये दोनों ही महादुःखदायी है। तुम इनसे स्नेह सम्बन्ध तोड़ दो। जो तुम परद्रव्यों को अपना बनाने का प्रयास करते हो, वह व्यर्थ अज्ञानता ही है अतः तुम ऐसी सरल (खोटी है) बुद्धि को क्यों नहीं छोड़ते हो ।

कविवर दौलतरामजी कहते हैं कि हे भाई! स्वर्ग के देवों की सागरोपम जैसी लम्बी आयु भी एक दिन व्यतीत हो जाती है, तो तेरी यह मनुष्य पर्याय का समय तो बहुत ही कम है, अतः यदि तुम अब भी ऐसा अमूल्य अवसर पाकर भी चूक गये तो समझ लो कि समुद्र में फेंकें हुये चिंतामणि रत्न के समान यह अवसर पुनः मिलनेवाला नहीं है।